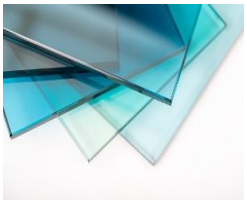

काँच और पर्यावरण

<u>काँच और पर्यावरण</u> ,देखा जाए तो इन दोनों में बहुत समानताये है। यदि आप काँच को स्वच्छ एवम सुन्दर रखेंगे तो वह पारदर्शी सिद्ध होता है अन्यथा काँच यदि दूषित रहता है, तो वह भी पारदर्शी ही कहलायेगा परन्तु उसमे से दिखने वाला हर दृश्य धुंधला मालूम होगा। उसके पश्चात उस काँच में से देखने वाला हर दृश्य चाहे फिर वह सत्य हो या फिर असत्य हो वह एक ही समान दिखेगा। कुछ इसी प्रकार है हमारा पर्यावरण, इसे भी यदि हम स्वच्छ रखेंगे तो यह भी हमे रोगो से मुक्त रखेगा अर्थात पर्यावरण यदि दूषित हुआ, तो अनेक रोग हमारे वायुमंडल में विचरण करेंगे, जिसके पश्चात समस्त जीव - जंतु भिन्न - भिन्न प्रकार के रोगो से पीड़ित हो जाएंगे। कहने का तात्पर्य यह है कि काँच और पर्यावरण, दोनों के लिए स्वच्छता का बहुत महत्त्व है।

दुनिया का हर शौक पला नहीं जाता ,काँच के खिलौनों को उछाला नहीं जाता। पर्यावरण को स्वयं स्वच्छ रखने से हर रोग होता है दूर ,क्योकि हर कार्य भगवान पर टाला नहीं जाता।

काँच और पर्यावरण के सन्दर्भ में एक और समानता दिखाई पड़ती है। प्राकृतिक काँच का निर्माण यानी ज्वालामुखीय काँच का निर्माण उसके पिघले हुए रूप के तेज़ी से ठंडा होते ही बनता है। ऐसे ही मेघ में अत्याधिक जल एकत्रित होने के पश्चात जब वह शीतल पड़ने लगता है तो मेघ वर्षा करने लगते है ,जिसके कारण वह वर्षा कि बूंदे धरा पर पड़ती है और वृक्षों की जड़ो से होते हुए प्रत्येक वृक्ष के प्रत्येक भाग को जल प्रदान करती है। जिसके कारण समस्त वृक्ष खिले - खिले रहते है अथवा काँच की ही भाँति वातावरण को शीतल रखते है।

काँच एक ऐसी वस्तु है जो शत प्रतिषत **पुनः प्रयोज्ये**, अथवा **पारदर्शी** है। काँच को किसी भी आकार में परिवर्तित कर उसे घरो की सज्जा में भी उपयोग में लाया जा सकता है। काँच आतंरिक सज्जा में बनावट और परिष्कार जोड़ता है। आतंरिक सज्जा के लिए उपयोग किए जाने पर यह विभिन्न आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए जाना जाता है।

“काँच की अत्याधिक उपयोगिता ही उसका श्रेष्ठ होना सिद्ध करता है।“

काँच को अपना प्रतिबिम्भ देखने के लिए भी उपयोग में लाया जाता है। **काँच के इसी रूप को दर्पण कहते है।** दर्पण का उपयोग अत्याधिक समय सजने सवरने के लिए होता है। दर्पण छवि की दिशा को एक समान लेकिन विपरीत कोण में उलट देते है जिससे प्रकाश उसपर चमकता है।

काँच का प्रयोग वाहनों में भी होता है जिसके कारण कोई भी वाहन चालक वाहन चलाते समय उस काँच या दर्पण से अपने पीछे की ओर के दृश्यों के प्रतिबिम्भ को भी देख सकता है। इसी प्रकार वाहन चालक वाहन चलाते समय सावधानी भी बरत सकता है। काँच और पर्यावरण दोनों को ही समान रूप से देखा जा सकता है। काँच हमारे अस्तित्व की छवि प्रस्तुत करता है वहीं पर्यावरण मानव जाती के अस्तित्व को उजागर करता है।

“एक काँच लोगो को बहुत चुभता है लेकिन जभ वह काँच आइना बन जाता है तभ उसे पूरी दुनिया देखती है।”

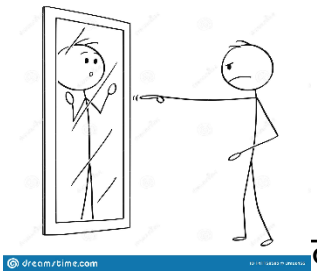

काँच के समक्ष खड़े होकर हम अपने सुख - दुख या पीढ़ा की बाते कर स्वयं के मन को शांत अथवा पीढ़ा ,मुक्त कर सकते है। ठीक इसके समान ही पर्यावरण है, यदि पर्यावरण में चारो ओर हरियाली छाई होती है अथवा चारो ओर मौन होता है तो वहाँ पर भी हम स्वयं की तनाव भरी ज़िन्दगी से मुँह

मोड़कर कुछ समय आराम एवम एकांत में व्यतीत कर सकते है।

काँच को कई रंगो में बनाया जा सकता है। काँच एक स्थायी ,पूर्ण प्रकार से पुनर्चक्रित करने योगये सामग्री है जो जलवायु परिवर्तन को कम करने अथवा कीमती प्राकृतिक संसाधनों को बचाने में योगदान देने जैसे महान पर्यावरणीय लाभ प्रदान करती है। काँच और पर्यावरण एक दूसरे के पर्याय है। दोनों को समान रूप से देखा जा सकता है।

जहाँ काँच साफ़ सुथरा रहकर सम्पूर्ण जाती की छवि स्पष्ट करने में सक्षम है वहीं प्रकृति भी साफ़ सुथरा रहकर सम्पूर्ण जीव - जंतु की छवि को प्रदर्शित करती

है।प्राकृतिक सौंदर्य उसके रखरखाव पर निर्भर है। **प्राकृतिक सम्पदा में सर्वोत्तम है काँच।**

अंततः काँच के विषय में यह कहा जा सकता है कि, काँच और पर्यावरण मनुष्य के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है अथवा **पृथ्वी के यह दो तत्व मानव जाती के जीवन में सर्वोत्तम स्थान पर होने चाहिए।**

नाम – कनिष्क शर्मा

कक्षा – ग्यारह

अजन्ता पब्लिक स्कूल , सेक्टर –31 , गुरुग्राम